साहित्य, संस्कृति और तंत्रज्ञान: आधुनिक भाषा चिंतन मीडिया का साहित्य पर प्रभाव

शंकरमूर्ति के. एन.

हिंदी विभाग, केएलई जी आई बागेवाड़ी कॉलेज, निपाणी, बेलगावी।

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17263935

ABSTRACT:

यह शोध आलेख साहित्य, संस्कृति और प्रौद्योगिकी (तंत्रज्ञान) के परस्पर संबंध और आधुनिक युग में उनके महत्व का मूल्यांकन करता है। यह बताता है कि कैसे प्राचीन काल में सीमित रहा साहित्य पहले भक्ति कवियों, फिर यातायात के साधनों, और स्वतंत्रता के उपरांत प्रिंट मीडिया के माध्यम से जन-जन तक पहुँचा। पिछले दो दशकों में आई इंटरनेट और डिजिटल क्रांति ने साहित्य के प्रचार-प्रसार को अभूतपूर्व गति दी है। लेख हिंदी भाषा के तकनीकी विकास—जैसे सॉफ्टवेयर (लीप, हिंदी विंडोज) और यूनिकोड प्रणाली का विकास—तथा ई-समाचार पत्रों (वेबदुनिया) एवं ऑनलाइन साहित्यिक पत्रिकाओं (अभिव्यक्ति, अनुभूति) के उदय पर प्रकाश डालता है। अंत में, यह निष्कर्ष निकाला गया है कि भाषा, साहित्य, संस्कृति और तकनीक के सार्थक संयोजन से ही इसका प्रयोजन साहित्य प्रेमियों तक पहुँच सकता है।

KEYWORDS:

साहित्य, संस्कृति, प्रौद्योगिकी, मीडिया, यूनिकोड.

शोधसार: साहित्य, संस्कृति और तंत्रज्ञान का महत्व, आपसी संबंध, आधुनिक युग में इन सबका प्रयोजन मनुष्य जाति केलिए किस हद तक प्रयोजन हो सकता है, इन सबका एक संक्षिप्त विवरण ही इस लेख का उद्देश्य है।

"साहित्य-संगीत कलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः। तृणं न खादन्नपि जीवमानः तद्भागधेयं परमं पशूनाम्"

साहित्य, संगीत और कला से विहीन मनुष्य साक्षात् नाखून और सींग रहित पशु के समान है। और यह पशुओं का भाग्य है कि वह उनकी तरह घास नहीं खाता। संस्कृत के एक महान कवि भर्तृहरि विरचित नीति शतकम के उपरोक्त श्लोक से साहित्य के महत्व का पता चलता है। भारत के पूर्व काल के गुरुकुल पद्धति में शास्त्रार्थी को चौरासी कलाओं में शिक्षा देकर पारंगत बनाकर, पंडित घोषित किया जाता था। वे पंडित अपने-अपने स्थलों को वापस जाकर अध्ययन किए शिक्षा का जगह-जगह पर प्रचार-प्रसार करते थे। विदेशी भी भारत के ज्ञान से आकर्षित होकर, शिक्षा ग्रहण कर अपने देशों में भी पंडितों को तैयार करने की परंपरा का प्रारंभ किया।

पंडितों और कवियों से विरचित साहित्य राजाओं के आस्थान तक ही सीमित रहता था, जनमानस तक इसकी पहुँच विरल था। इसे जनमानस तक पहुँचाने का श्रेय भक्ति कालीन कवियों को देना पड़ता है। तदनंतर यातायात के साधनों के आविष्कार से साहित्य का व्यापक रूप से प्रचार-प्रसार होने लगा। लोकगीतों का श्रवण-कीर्तन द्वारा जितना व्यापक प्रचार हुआ वह कार्य अत्यंत अनोखा है क्योंकि इसमें पीढ़ी-दर-पीढ़ी लगी हुई रहती है।

साहित्यिक ग्रंथों की रचना तो आदि काल से होती आ रही है। लेकिन जब उनके संरक्षण की बात आती है तो इसमें हमें निराशा दिखती है क्योंकि पहले काल के अमूल्य कृतियाँ संरक्षित नहीं हो पायीं शायद इसी कारण उनकी प्रामाणिकता के बारे में संदेह होता है। फिर भी कुछेक ग्रंथ संरक्षित रूप में मिले जिसके कारण हमें उस काल के साहित्य का परिचय प्राप्त होता है। आज भी साहित्य के अध्ययन केलिए यही ग्रंथ आधार है।

आम जनता तक पहुँचाने पर ही साहित्य का उत्तरोत्तर विकास संभवनीय है। भारत में अंग्रेजों के शासन काल में हुई हर तरह के हड़ताल इसके साक्षी हैं । तब साहित्य के माध्यम से ही अंग्रेजों को भारत से खदेड़ने का भरसक प्रयत्न प्रारंभ हुआ। फलस्वरूप १९४२ में स्वतंत्रता को प्राप्त करने का प्रयत्न होते-होते विफलता में बदल गया। इस विफलता ने भारत के जनमानस को स्वतंत्रता प्राप्ति केलिए जाग्रत किया। हिंदी साहित्य की हर विधा जैसे कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध आदि के द्वारा यह प्रयत्न हुआ। रामायण, महाभारत के प्रसंगों के आधार पर साहित्य की रचना कर लोगों तक पहुँचाने का कार्य हुआ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद प्रिंट मीडिया ने अपना कदम ज़ोर से बढ़ाया। दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, तिमाही, छमाही और तो और वार्षिक पत्रिकाएँ हर भाषा में प्रकट होने से साहित्य का भी उत्तरोत्तर विकास होने लगा। दैनिक पत्रिका को पढना आम जनता को एक दैनिक कार्य लगा। जिस दिन पत्रिका नहीं निकलती वह दिन फीका लगता था।

आजकल साहित्य का प्रचार-प्रसार अनेक प्रकार के मीडिया के द्वारा दिन दूनी रात चौगुनी हुई है। पिछले पंद्रह-बीस वर्ष से मीडिया में क्रांति मची हुई है, जब से भारत में इंटरनेट की सेवा उपलब्ध हुई तब से लोग जहाँ रहते हैं वहीं पर समाचार प्राप्त करते हैं। साहित्य का अध्ययन कर सकते हैं।

पिछले कुछ दशक में जिस तरह से तकनीकी विकास हुआ उतना तेजी से हिन्दी भाषा का विकास नहीं हुआ। यदि हुआ भी तो प्रारंभ से कंप्यूटर की भाषा अंग्रेजी रही। हिन्दी को कंप्यूटर से जोड़ने का सबसे पहला प्रयास राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा किया गया। जब उसने हिन्दी में काम करने के लिए 'शब्दिका' नामक सॉफ्टवेयर तैयार करवाया। इसके कुछ समय बाद 'अनुस्मारक' नामक सॉफ्टवेयर ईजाद किया गया इसकी विशेषता यह थी कि इसमें अन्य भारतीय भाषाओं के साथ अंतरण की सुविधा उपलब्ध थी।

दो दशक पहले तक हिन्दी के पास अपना कोई सॉफ्टवेयर नहीं था इसका निर्माण भारत सरकार की संस्था सी-डैक ने सबसे पहले किया और जिसका नाम 'लीप' रखा। कुछ दिनों बाद माइक्रोसॉफ्ट ने हिन्दी विंडोज़ नामक सॉफ्टवेयर लॉन्च किया जो हिन्दी में टाइपिंग आदि के

लिए सक्षम था।

हिंदी तकनीक के क्षेत्र में सबसे बड़ा विकास उस समय हुआ, जब भाषा की एक नयी एनकोर्डिंग प्रणाली विकसित हुई, जिसे यूनिकोड (Unicode) कहते हैं। यूनिकोड का शाब्दिक अर्थ है जिसमें भाषा की कोड की जाने वाली छवियाँ एक जैसी हों, जिसमें एकरूपता हो। अंग्रेजी के प्रभुत्व को तोड़ने और अन्य भाषाओं के महत्व के लिए यूनिकोड कंसोर्टियम (Unicode Consortium) ने विश्व की सभी प्रमुख भाषाओं के सभी संकेतों के लिए एक निश्चित कोड अथवा मापदण्ड तैयार कर दिया है। इससे दुनिया की कोई भी प्रसिद्ध भाषा के बीच ऐसा कुछ संयोजन ज़रूर मिलता है जिससे किसी भी फॉन्ट में टाइप की हुई सामग्री किसी भी दूसरे कंप्यूटर अथवा फॉन्ट में खुल जायेगी। यदि उसे यूनिकोड में टाइप किया गया हो। यूनिकोड प्रणाली मूलतः उन्हीं कंप्यूटरों में सुचारू रूप से चलती है जिनकी काम की क्षमता पेंटियम-4 और रैम (RAM) क्षमता कम-से-कम २५६ मेगाबाइट की हो। आज माइक्रोसॉफ्ट के लगभग सभी कंप्यूटरों में यह सुविधा उपलब्ध है चाहे वह माइक्रोसॉफ्ट एक्स.पी. हो अथवा विंडोज विस्टा।

तकनीक की दुनिया में हिन्दी की महत्ता उस समय और बढ़ने लगी जब डिजिटल क्रांति में हिन्दी के समाचार-पत्रों को ई-समाचार-पत्र में निकालना प्रारंभ कर दिया। जैसे भास्कर डॉट कॉम, जनसत्ता डॉट कॉम आदि, लेकिन इस दिशा में प्रारंभिक प्रयास करने का श्रेय मध्य प्रदेश, इंदौर शहर से निकलने वाले समाचार-पत्र नयी दुनिया को जाता है, जिसने सबसे पहले इंटरनेट की दुनिया का पहला समाचार पत्र वेबदुनिया नाम से प्रारंभ किया। इसके बाद बलेंदु शर्मा दाधीच ने प्रभासाक्षी डॉट कॉम (Prabhasakshi.com) निकाला। तत्पश्चात् ई-समाचार-पत्रों की बाढ़ आ गयी।

धीरे-धीरे हिन्दी भाषा का इंटरनेट में इतना उपयोग बढ़ने लगा कि लोग ऑनलाइन पत्रिकाएँ चलाने लगे, जिसमें साहित्यिक कविता, कहानी से लेकर उपन्यास तक सभी प्रकार की सामग्री दी जाने लगी। इस दिशा में सबसे बड़ा प्रयास खाड़ी देश से निकलने वाली दो ऑनलाइन पत्रिकाओं को जाता है। जिनका नाम है अभिव्यक्ति डॉट कॉम और अनुभूति डॉट कॉम। महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा का

ऑनलाइन पोर्टल हिंदी समय डॉट कॉम (Hindisamay.com) ने भी इस दिशा में अपनी विशिष्ट पहचान बनायी है।

निष्कर्ष: आखिरकार कह सकते हैं कि साहित्य, संस्कृति और तंत्रज्ञान केलिए भाषा की जितनी आवश्यकता है, इसका विपरीत भी सही है। इसका प्रयोजन साहित्य प्रेमियों केलिए पहुँच जाय तो सार्थक होगा।

Funding:
This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.